Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

विज्ञान: कला, संस्कृति एवं समाज के मध्य सेतू

Santosh Kumari*

Assistant Professor, Dayanand Mahila College, Kurukshetra, Haryana

----------X----------

मानव की जिज्ञासा और आवश्यकता उसे निरन्तर विकास के पथ पर नित नए-नए आविष्कार एवम् प्रयोग करने को प्रेरित करती रहती है। आज हम अपने चारों और नज़र घुमाएं, तो चारों दिशाओं में विज्ञान के चमत्कार और अविष्कारों ने हमारा जीवन ही बदल दिया है। यातायात के साधन हों अथवा दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हम पूरी तरह से विज्ञान पर निर्भर है। वस्त्र, भवन, खाद्य सामग्री सभी पदार्थ परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से विज्ञान की ही देन है।

आज मानव अपनी जिज्ञासा और आवश्यकता की पूर्ति के मार्ग पर इतना आगे बढ गया है कि अब विज्ञान मात्र आवश्यकताओं की पूर्ति का ही साधन नहीं, बल्कि कला, मनोरंजन तथा संस्कृति के विकास के लिए भी एक वरदान सिद्ध हो रहा है। विज्ञान समाज और संस्कृति को जोड़ने की एक मजबूत कड़ी का कार्य भी कर रहा है। यदि हम विज्ञान को समाज, संस्कृति और कला के मध्य एक सेतू की संज्ञा दे, तो अतिश्योक्ति न होगी।

आज विज्ञान एवं तकनीक समाज में संचार साधनों की क्रान्ति ले आई है। मानव आज विश्व के किसी भी कोने में बैठा हो। वह दुसरे देश की संस्कृति, समाज और कला से एक पल में जुड जाता है। वर्तमान समय में कला, संस्कृति का प्रचार-प्रसार जिस गति से हो रहा है, वह पहले कदापि संभव नहीं था। मानव की विकासवादी और विस्तारवादी सोज आज उसे इस मुकाम पर ले आई है कि वह पूरी दुनिया में कला तथा संस्कृति का सन्देश अपनी प्रस्तुति द्वारा साकार रूप में प्रदर्शित व प्रसारित कर सकता है।

प्राचीन समय में यदि हमें एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश की कला व संस्कृति अथवा समाज के बारे में जानना होता था, तो मात्र कुछ लोग ही एक दूसरे की संस्कृति, कला के दर्शन कर पाते थे, क्योंकि उस समय यातायात के साधनों तथा दूरसंचार एवम् दूरदर्शन के साधनों का भारी अभाव था।

धीरे-धीरे विज्ञान ने समाज की जरूरतों को समझते हुए मानव ने इस दशा में अनेक प्रयास किए। मानव के उन्हीं अथक प्रयासों और भारी मेहनत का नतीज़ा हमारे सामने है। आज हम जिस प्रकार का सुखदायी जीवन जी रहे हैं, वह विज्ञान की देन तो है ही, साथ ही हमारी जिज्ञासा और संकल्प शक्ति का भी फल है। विज्ञान ने केवल शहरों, प्रदेशों की दूरी को खत्म कर दिया है, अपितु एक देश से दूसरे देश की दूरी को भी समेटकर रख दिया है। या यूं कहे पूरी पृथ्वी को ही एक परिवार बना दिया है।

आज यदि हम संकल्प मात्र करें कि किसी दुसरे देश की संस्कृति व कला के दर्शन करने है, तो वह सहजता से ही उपलब्ध है और यदि हमें धरती के किसी भी कोने की यात्रा करनी है, तो अत्याधुनिक यान हमारी सेवा में सदैव तत्पर है। मात्र कुछ औपचारिकताओं की पूर्ति कर सरलतापूर्वक किसी भी देश में आ जा सकते है।

आज विज्ञान के माध्यम से हम एक दूसरे देश या समाज में हो रही सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में न केवल समाचारों द्वारा जान सकते है, बल्कि उन देशों की फिल्म कला प्रदर्शनियों व कला उत्सवों तथा विचार गोष्ठियों को भी सहज रूप से देख सुन कर आनन्द ले सकते है। मात्र कुछ वर्ष पहले तक जब केवल रेडिओ व टी.वी. के माध्यम से भी अपनी कला एवम् संस्कृति के प्रचार से काफी खुश थे आज वहीं इन्टरनेट ने तो सूचना प्रसारण के क्षेत्र में क्रांति ही ला दी है। सोशल मिडिया के द्वारा फेसबुक, व्हटसप, यूट्यूब जैसी अनेक एप्स् ने दुनिया को देखने, समझने का नजरिया ही बदल दिया है। आज हम दूसरे देश के संगीत, कला एवम् संस्कृति को सुन, देख व समझ पर रहे हैं, जो पहले अति दुर्लभ था। विज्ञान के माध्यम से अपनी कला व संगीत में दूसरी संस्कृति व

www.ignited.in

कला का समिश्रण कर नई-नई सम्भावनाओं का प्रगटाए कर पा रहे है। फयुज्न म्यूजिक जिसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

अपनी संस्कृति का प्रचार और प्रसार करना हो या विश्व में कला, संगीत द्वारा मानवता का सन्देश देना हो, उसमें विज्ञान व तकनीक वास्तव में एक सेतू का ही काम कर रहे है। दुनिया सिमट कर एक छोटे से मोबाइल में आ गई है। विज्ञान में हो रहे नित्य नए-नए प्रयोग हमारी कला एवम् संस्कृति को भी नए मायने व नई परिभाषा दे रही है। हम एक दूसरे से इतना अधिक जुड़े हुए महसूस इससे पहले कभी नहीं करते थे, जितने आज है।

आज भारतवर्ष की बनी फिल्में पूरी दुनिया में देखी व पंसद की जा रही है तथा वहां की फिल्में हमारे यहां फिल्म फेस्टिवलों में, सिनेमाघरों तथा टी.वी. पर दिखाना आम बात है। आज आस्कर फिल्म फेयर अवार्ड हो या कला के क्षेत्र में ग्रेमी अवार्ड हो यह दुसरे देश के कलाकारों को मिलना इस बात की जिन्दा मिसाल है की विज्ञान कला व संस्कृति को जोड़ने का कितना बड़ा कार्य कर रहा है।

संगीत के क्षेत्र में यदि देखा जाए, तो विज्ञान ने जहां संगीत को प्रचारित व प्रसारित करने में योगदान दिया हैं, वहीं तकनीक ने नए-नए वाद्यों को जन्म दिया है। आज हमारी एक दूसरे पर निर्भरता भी कम हुई है। जहां पहले हमें गायन, वादन या नृत्य का रियाज़ करने के लिए संगत के लिए किसी दूसरे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती थी, वहां आज इलेक्ट्रॉनिक्स तानपुरा, इलेक्ट्रॉनिक्स तबला आदि रियाज़ करने के लिए उत्तम साधन है। परन्तु अब विज्ञान तकनीक ने इन्हें भी समेट कर मोबाइल में स्थापित कर दिया है। जिसके द्वारा हम किसी भी समय तथा स्थान पर सरलता से रियाज़ कर सकते है।

विज्ञान के सकरात्मक प्रयासों का ही नतीजा है जो आज प्रत्येक देश की कला संस्कृति इतनी अधिक प्रचलित और विकसित हो पा रही है। आज कला संस्कृति सरहदों को तोड़ कर दिलों में उतर कर आपसी प्रेम और विश्व बंधुत्व की भावना को प्रबल कर रही है। आज हम एक दुसरे देश समाज से जुड कर वहां की संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था को बहुत नजदीक से देख, सुन और समझ पर रहे है। जिसका यह फायदा हुआ है की हम न सिर्फ मानसिक तौर पर बल्कि भावनात्मक रूप से भी एक दुसरे को समझ कर आपस में जुड रहे है। जिससे आर्थिक तौर पर भी सभी को फायदा मिल रहा है। परस्पर संस्कृतियों के आदान-प्रदान से वहां की वस्त्र, भोजन और संगीत साहित्य भी मार्केटिंग जिस प्रकार होने लगी है। उससे समाज में रोजगार के भी नए-नए अवसर पैदा हो रहे है। आज विदेशों में भारतीय संगीत भारतीय योग तथा आयुर्वेद के प्रति बढती रूचि इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज चीन जैसा देश सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार कर रहा है कि भारत सोत पॉवर के क्षेत्र में चाइना से कही आगे है। इससे चाइना को भी सीख लेने की आवश्यकता है। यह सब विज्ञान के कारण ही संभव हो पाया जो आज भारतीय संस्कृति का प्रचार और प्रसार विश्व स्तर पर हो पा रहा है। आज भारत में भी आयोजित विश्व पुस्तक मेला हो या अन्य गोष्ठी जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो रही है। उसका फायदा हमारे साहित्यकारों, कलाकारों, लेखकों, विचारकों को तो मिल ही रहा है, अपितु हमारे ज्ञान में हो रही अनमोल वृद्धि हमें नए-नए प्रयासों के लिए प्रेरणा का भी श्रेष्ठ स्त्रोत है।

एक कलाकार चाहे वो संगीत के क्षेत्र में है, या अन्य ललित कलाओं के क्षेत्र में जैसे मूर्ति कार, वास्तुकार हो या साहित्य के पथ का अनुगामी लेखक, कवि हो या सभी अपने-अपने क्षेत्र के साधक तो होते ही है, वरन ये सभी अपनी संस्कृति के प्रचारक व अपने - अपने देश के सचे राजदूत भी होते है। किसी देश की महानता वहां की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति से कहीं अधिक वहां की संस्कृति से जानी जाती है। इसलिए यह अपने संस्कृति के सजीव दर्शन करवाने वाले राजदूत होते है।

अति खेद का विषय है कि आज विश्व में चारों और युद्ध व अंशाति का माहोल है। तृतीय विश्व युद्ध के दवार पर खडी, बेचैन दुनिया को किस पल क्या खबर सुनाई दे जाए कोई नहीं जानता। एक तरफ आंतकवाद नकसलवाद का दैत्य मुँह खोले खड़ा है। तो दूसरी और महाशक्तियों की महत्वकांशा अति विस्तारवादी सोच पूरी दुनिया में तबाही लाने को आतुर है। नित्य नए-नए मिसाइल व परमाणु परीक्षण कर एक को धमका रहे है, तो सीरिया, फिलिस्तान, अफगानिस्तान जैसी समस्यों मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा बनी हुई है।

इस अशान्त और युद्ध के माहोल में यदि आशा की किरण कोई है तो केवल कला, संगीता व साहित्य का परस्पर आदान-प्रदान कर मानवता व शांति का सन्देश दिया जाना ही एकमात्र सशक्त उपाय के रूप में देखा जा रहा है। आज इस हृदय की तपती जलती मरू धरती पर कला, संगीत, साहित्य की अमृतवर्षा ही ठंडक पंहुचा सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज विश्व में जितने भी मसले है, वह एक

दूसरे के नजदीक आने से, आपसी बातचीत से हल हो सकते है तथा आपस में जुड़ने का एकमात्र साधन एक दूसरे की कला एवम् संस्कृति से जुड़ना है और विज्ञान इस कार्य को परोक्ष व अपरोक्ष रूप से बखूबी कर रहा है। वास्तव में विज्ञान कला, संस्कृति और समाज के मध्य एक सेतू का कार्य कर रहा है।

Corresponding Author

Santosh Kumari*

Assistant Professor, Dayanand Mahila College, Kurukshetra, Haryana